

विश्वभारती हिंदी भवन पुस्तकालय: स्थापना, विकास का अवलोकन

* अजय कुमार शर्मा

* उप-पुस्तकालयाध्यक्ष, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन - ७३१२३५
ईमेल - ajaysharma.lib@visva-bharati.ac.in, मो. ९७३५१११०६४

Received: February 28, 2026

Accepted: March 31, 2026

शोध सार

विश्वभारती, शांतिनिकेतन के हिंदी भवन पुस्तकालय की स्थापना १९३९ में रवींद्रनाथ टैगोर की बहु-सांस्कृतिक शिक्षा-दृष्टि और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रयासों से हुई। यह पुस्तकालय हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के अध्ययन-अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य पुस्तकालय के ऐतिहासिक विकास, संग्रह, सेवाओं और वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करना है। प्रारंभिक सीमित संग्रह से विकसित होकर पुस्तकालय में वर्तमान में ३७,५३२ पुस्तकें, दुर्लभ ग्रंथ, हस्ताक्षरित कृतियां और पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। २०१६-१७ से २०२५-२६ तक के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि आवंटित धनराशि और पुस्तक खरीद में सीधा संबंध है। वर्ष २०१९-२० में अधिकतम २,१४,००० रुपये के फंड से ५७६ पुस्तकें खरीदी गईं, जबकि २०२५-२६ में फंड घटकर १९,००० रुपये और खरीद ४३ रह गई। उपहार से प्राप्त पुस्तकों में भी २०१६-१७ के १२२ से गिरावट आकर २०२५-२६ में २३ रह गई। पुस्तकालय ने OPAC, डिजिटल लाइब्रेरी, इंटरनेट और रिप्रोग्राफी जैसी आधुनिक सेवाएं अपनाई हैं। अध्ययन दर्शाता है कि पुस्तकालय के सतत विकास हेतु नियमित बजट, दान और तकनीकी उन्नयन आवश्यक हैं, ताकि यह हिंदी अनुसंधान में अपना योगदान बनाए रख सके।

बीज शब्द : विश्वभारती, हिंदी भवन पुस्तकालय, पुस्तकालय प्रबंधन, हिंदी साहित्य संग्रह, बजटीय विश्लेषण, डिजिटल पुस्तकालय, शैक्षणिक संसाधन ।

विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल में स्थित एक प्रमुख शिक्षण संस्थान है, जिसकी स्थापना १९२१ में रवींद्रनाथ टैगोर ने की थी। विश्वभारती परिसर में स्थित हिंदी भवन, हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन,

अनुसंधान और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण केंद्र है। हिंदी भवन पुस्तकालय, इस केंद्र का एक अभिन्न अंग है और हिंदी अध्ययन के लिए एक अमूल्य संसाधन है।

स्थापना:

हिंदी भवन की स्थापना सी.एफ.एंड्रूज और क्षितिमोहन सेन से प्रेरित थी और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के अथक प्रयास का परिणाम हिंदी भवन स्थापना १९३९ में हुई थी। हिंदी भवन की स्थापना के साथ ही इस पुस्तकालय की भी नींव रखी गई। प्रारंभ में, पुस्तकालय में सीमित संख्या में पुस्तकें थीं, वो मुख्य रूप से हिंदी साहित्य के क्लासिक्स और आधुनिक साहित्य के कुछ प्रमुख कृतियों पर केंद्रित थी। विश्वभारती हिंदी भवन पुस्तकालय की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है, जिसमें कई महान व्यक्तित्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन व्यक्तित्वों ने न केवल पुस्तकालय की नींव रखी, बल्कि इसे हिंदी साहित्य और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुछ प्रमुख व्यक्तित्व जिनका योगदान उल्लेखनीय है:

- ✚ रवींद्रनाथ टैगोर: विश्वभारती विश्वविद्यालय के संस्थापक, रवींद्रनाथ टैगोर का इस पुस्तकालय की स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने विश्वभारती को एक ऐसी संस्था बनाने की कल्पना की थी जहां विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का संगम हो। हिंदी भवन इसी कल्पना का एक हिस्सा था। टैगोर मानते थे कि पुस्तकालय ज्ञान का एक अक्षय स्रोत है जहां लोग एक साथ आकर ज्ञान साझा करते हैं और एक बेहतर समाज का निर्माण करते हैं। उनके लिए पुस्तकालय सिर्फ किताबों का घर नहीं था, बल्कि यह विचारों का एक मंदिर है।
- ✚ पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी: हिंदी साहित्य के एक प्रमुख विद्वान, पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने हिंदी भवन की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने पुस्तकालय को संगठित करने और इसे एक शैक्षणिक केंद्र के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- ✚ हाजरी प्रसाद द्विवेदी: हाजरी प्रसाद द्विवेदी भी हिंदी साहित्य के एक प्रमुख विद्वान थे और उन्होंने हिंदी भवन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने पुस्तकालय को समृद्ध बनाने के लिए कई दुर्लभ पुस्तकें और ग्रंथ दान किए।

विश्वभारती हिंदी भवन पुस्तकालय की स्थापना में कई महान व्यक्तित्वों का योगदान है। उनके प्रयासों के कारण आज यह पुस्तकालय हिंदी साहित्य का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। यह पुस्तकालय न केवल हिंदी साहित्य के अध्ययन के लिए बल्कि भारतीय संस्कृति और विरासत को समझने के लिए भी एक महत्वपूर्ण संसाधन है।

शैक्षणिक संस्थानों में पुस्तकालयों का महत्व

शैक्षणिक संस्थानों में पुस्तकालयों का अत्यधिक महत्व है। वे शिक्षा के केंद्र बिंदु हैं और छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पुस्तकालयों का महत्व निम्नलिखित है:

- ✚ ज्ञान का भंडार: पुस्तकालय ज्ञान का एक विशाल भंडार है। इसमें विभिन्न विषयों पर पुस्तकें, पत्रिकाएं, शोध पत्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री और अन्य संसाधन उपलब्ध होते हैं। छात्रों को विभिन्न विषयों की गहन समझ प्राप्त करने और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए पुस्तकालय एक अमूल्य संसाधन है।
- ✚ शोध और अध्ययन के लिए आवश्यक: शोध और अध्ययन के लिए पुस्तकालय अनिवार्य है। शोधकर्ताओं और छात्रों को अपने शोध कार्यों के लिए आवश्यक सामग्री जैसे पुस्तकें, लेख, डेटा और अन्य संसाधन पुस्तकालय से प्राप्त होते हैं।
- ✚ बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है: पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की सामग्री उपलब्ध होने से छात्रों की जिज्ञासा बढ़ती है और वे नए-नए विषयों की खोज करते हैं। इससे उनका बौद्धिक विकास होता है और वे सर्वांगीण रूप से विकसित होते हैं।
- ✚ अध्ययन कौशल में सुधार: पुस्तकालय में अध्ययन करने से छात्रों को स्वयं अध्ययन करने की आदत पड़ती है। वे सूचनाओं को खोजने, विश्लेषण करने और संक्षेपित करने का कौशल सीखते हैं।
- ✚ सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है: पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध होने से छात्रों की कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। वे नए विचारों और अवधारणाओं के संपर्क में आते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।
- ✚ जीवन भर सीखने को प्रोत्साहित करता है: पुस्तकालय छात्रों को जीवन भर सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। वे पुस्तकालय से जुड़कर नए-नए विषयों की खोज करते रहते हैं और अपने ज्ञान को निरंतर बढ़ाते रहते हैं।
- ✚ समाजिक विकास में योगदान: पुस्तकालय सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें ज्ञान साझा करने का अवसर प्रदान करता है।

पुस्तकालय कि सेवाएँ:

- ✚ नई पुस्तकों की सूची;
- ✚ पुस्तकों का लेन-देन;
- ✚ संदर्भ सेवाएँ;
- ✚ ऑन-लाइन सार्वजनिक पहुँच कैटलॉग;
- ✚ पुस्तक आरक्षण;
- ✚ ग्रंथसूची सेवाएँ;
- ✚ रिप्रोग्राफिक (पुनरुत्पादन) सेवाएँ;
- ✚ विभिन्न पुस्तकालयों के माध्यम से अंतर पुस्तकालय ऋण सेवाएँ;



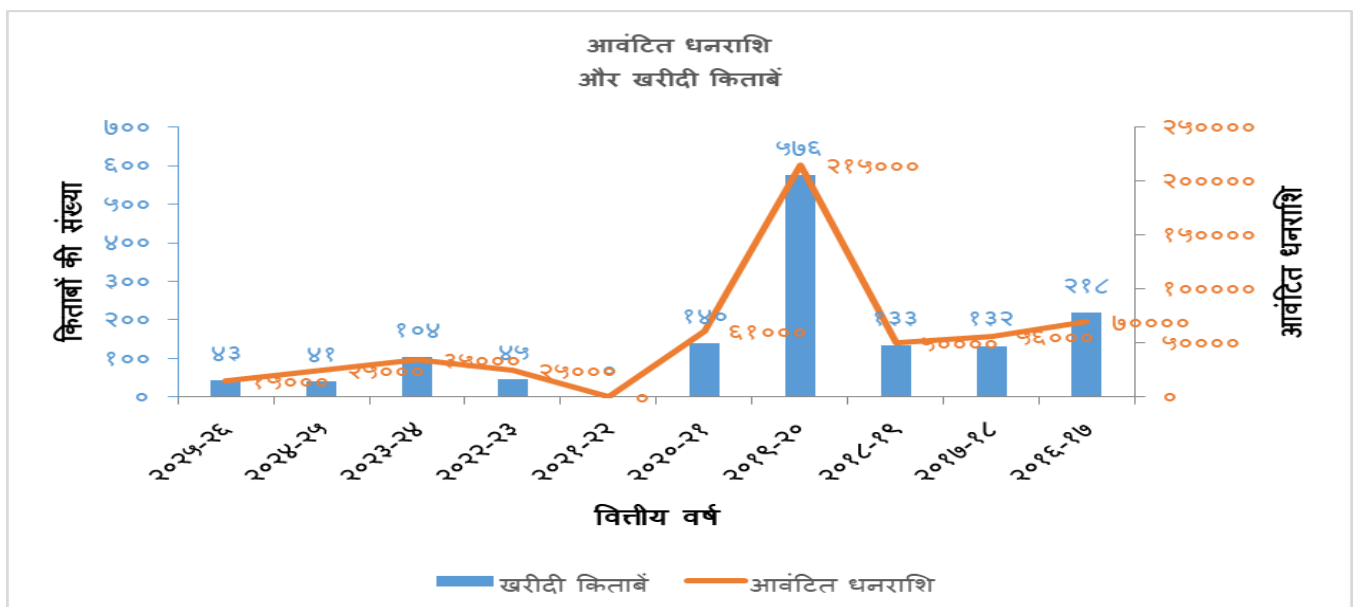
चित्र-१: पुस्तकालय कि सेवाएँ

🖨️ ड्रिलबिट -एंटी प्लेगिरिज्म सॉफ्टवेयर; एवं

🌐 इंटरनेट खोज और ब्राउजिंग ।

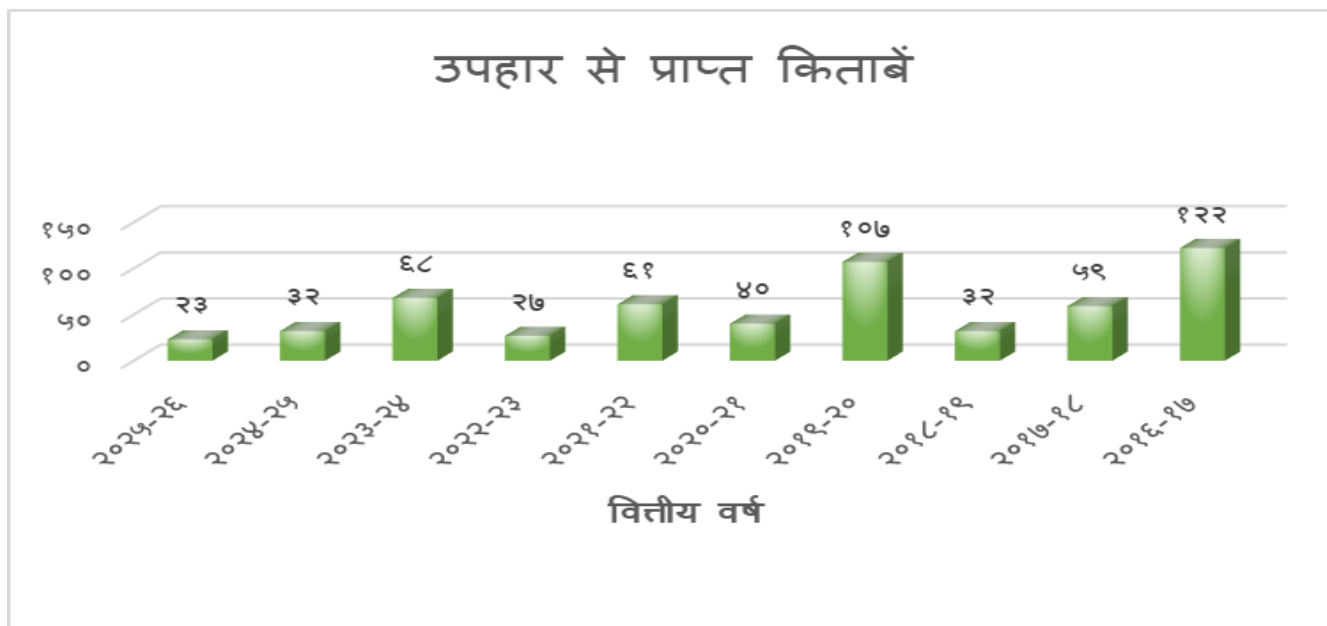
संग्रह:

यह एक उत्कृष्ट पुस्तकालय भी है, जहां महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्रेमचंद, बनारसीदास चतुर्वेदी और हजारीप्रसाद द्विवेदी की हस्ताक्षरित पुस्तकें, गांधी पर विशेष संग्रह और रवींद्रनाथ टैगोर की अनुवादित कृतियां, हिंदी साहित्य की पुस्तकें और हिंदी में विभिन्न विषयों की पुस्तकें संरक्षित हैं। वर्तमान में हिंदी भवन पुस्तकालय के संग्रह में ३७५३२ पुस्तकें हैं। यहां पुरानी और समकालीन पत्रिकाओं का भी समृद्ध संग्रह है। पाठकों के लिए प्रतिदिन ६ नियमित पत्रिकाएँ और २ हिंदी समाचार पत्र आते हैं। पुस्तकालय में पढ़ने के लिए ६ लोगों के बैठने का प्रावधान है और लगभग २६० लोग प्रतिदिन औसतन ३५ पुस्तकों का लेन-देन करते हैं।



ग्राफ -१: हिंदी भवन पुस्तकालय की आवंटित धनराशि और खरीदी गई किताबें

दिए गए ग्राफ-१ से स्पष्ट है कि हिंदी भवन पुस्तकालय की आवंटित धनराशि और खरीदी गई किताबों की संख्या में सीधा संबंध है। वर्ष २०१९-२० में सबसे अधिक २,१४,००० रुपये का फंड मिला जिसके कारण ५७६ किताबें खरीदी गईं, जो १० वर्षों में सर्वाधिक है। वहीं २०२१-२२ में फंड न मिलने के कारण एक भी किताब नहीं खरीदी गई। २०१९-२० के बाद से फंड में लगातार गिरावट आई है और २०२५-२६ में यह घटकर केवल १९,००० रुपये रह गया है, जिससे किताबों की खरीद भी मात्र ४३ रह गई। इससे पता चलता है कि पुस्तकालय के विकास के लिए नियमित बजट का होना अत्यंत आवश्यक है।



ग्राफ -२: उपहार से प्राप्त किताबें

दिए गए बार ग्राफ-२ में २०१६-१७ से २०२५-२६ तक उपहार से प्राप्त किताबों की संख्या दिखाई गई है। वर्ष २०१६-१७ में सबसे अधिक १२२ किताबें उपहार में प्राप्त हुईं, जबकि २०२५-२६ में सबसे कम २३ किताबें मिलीं। २०१९-२० में भी १०६ किताबें उपहार में आई थीं, जो दूसरा सबसे ऊँचा आंकड़ा है। कुल मिलाकर देखा जाए तो पिछले १० वर्षों में उपहार से प्राप्त किताबों की संख्या में उतार-चढ़ाव रहा है, लेकिन हाल के वर्षों २०२४-२५ और २०२५-२६ में इसमें गिरावट देखी गई है। इससे पता चलता है कि खरीद के साथ-साथ उपहार / दान भी पुस्तकालय के संग्रह को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पुस्तकालय का विकास मुख्य रूप से आवंटित बजट पर निर्भर है। जब बजट घटा, तो न खरीद बढ़ी और न ही उपहार। इसलिए पुस्तकालय के संग्रह को बनाए रखने के लिए नियमित फंड के साथ-साथ दान/उपहार को भी प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

विकास:

विश्वभारती हिंदी भवन पुस्तकालय की स्थापना के बाद से इसका विकास निरंतर जारी रहा है। यह पुस्तकालय न केवल हिंदी साहित्य का एक खजाना है बल्कि हिंदी भाषा और संस्कृति के अध्ययन-अध्यापन का एक प्रमुख केंद्र भी बन गया है।

विकास के प्रमुख चरण:

- 🎨 **प्रारंभिक चरण:** स्थापना के समय पुस्तकालय में मुख्य रूप से हिंदी साहित्य के क्लासिक्स और कुछ आधुनिक कृतियां थीं।

- 📖 **विस्तार:** धीरे-धीरे पुस्तकालय का विस्तार हुआ और इसमें विभिन्न विषयों पर पुस्तकें, पत्रिकाएं, शोध पत्र, और अन्य संसाधन जुड़ते गए।
- 📖 **आधुनिकीकरण:** समय के साथ पुस्तकालय ने आधुनिक तकनीक को अपनाया। ऑनलाइन कैटलॉग, डिजिटल लाइब्रेरी और इंटरनेट सुविधाओं के माध्यम से पुस्तकों और संसाधनों तक पहुंच आसान हो गई।
- 📖 **विविधता:** पुस्तकालय में अब हिंदी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे कि कविता, गद्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना, भाषा विज्ञान, इतिहास, संस्कृति आदि से संबंधित सामग्री उपलब्ध है।
- 📖 **दुर्लभ ग्रंथ:** पुस्तकालय में दुर्लभ और प्राचीन ग्रंथों का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है, जो हिंदी साहित्य के इतिहास और विकास को समझने के लिए अमूल्य हैं।

विकास के प्रमुख कारक:

- 📖 **विश्वभारती का समर्थन:** विश्वभारती विश्वविद्यालय का निरंतर समर्थन पुस्तकालय के विकास के लिए महत्वपूर्ण रहा है।
- 📖 **विद्वानों और साहित्यकारों का योगदान:** विभिन्न विद्वानों और साहित्यकारों ने पुस्तकालय को पुस्तकें और अन्य संसाधन दान करके इसका विकास किया है।
- 📖 **छात्रों और शोधकर्ताओं की मांग:** छात्रों और शोधकर्ताओं की बढ़ती हुई मांग के कारण पुस्तकालय को नए-नए संसाधन जुटाने पड़े।
- 📖 **तकनीकी विकास:** तकनीकी विकास के साथ पुस्तकालय ने भी खुद को अपडेट किया है।

पिछले दशकों में, पुस्तकालय ने उल्लेखनीय विकास किया है।

- 📖 **पुस्तक संग्रह में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है,** जिसमें अब हिंदी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे कि कविता, गद्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना, भाषा विज्ञान, इतिहास, संस्कृति आदि से संबंधित पुस्तकें शामिल हैं।
- 📖 **पुस्तकालय में दुर्लभ और प्राचीन ग्रंथों का भी एक महत्वपूर्ण संग्रह है,** जो हिंदी साहित्य के इतिहास और विकास को समझने के लिए अमूल्य हैं।
- 📖 **इसके अलावा,** पुस्तकालय में पत्रिकाओं, शोध प्रबंधों, अखबारों और अन्य प्रकाशन सामग्री का भी एक व्यापक संग्रह है।
- 📖 **पुस्तकालय ने आधुनिक तकनीक को भी अपनाया है,** जैसे कि ऑनलाइन कैटलॉग, डिजिटल लाइब्रेरी और इंटरनेट सुविधाएं, जो छात्रों, शोधकर्ताओं और सामान्य पाठकों के लिए पुस्तकों और संसाधनों तक पहुंच को आसान बनाती हैं।
- 📖 **पुस्तकालय विभिन्न अवसरों पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन कर रहा है ।**
- 📖 **पुस्तकालय में सतर्कता और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी लगाया गया है ।**

भविष्य की संभावनाएं:

- 📖 डिजिटलाइजेशन: भविष्य में पुस्तकालय अधिक से अधिक डिजिटलाइजेशन की ओर बढ़ेगा।
- 📖 राष्ट्रीय सहयोग: पुस्तकालय अन्य संस्थानों के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाएगा।
- 📖 नए विषयों पर ध्यान: पुस्तकालय नए विषयों जैसे डिजिटल साहित्य, अनुवाद अध्ययन आदि पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगा।

निष्कर्ष:

विश्वभारती हिंदी भवन पुस्तकालय हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह एक अमूल्य संसाधन है जो छात्रों, शोधकर्ताओं और हिंदी साहित्य के प्रति उत्साही लोगों को ज्ञान और प्रेरणा प्रदान करता है। पुस्तकालय के निरंतर विकास और समृद्धि से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान की उम्मीद है।

सन्दर्भ

1. विश्वभारती वार्षिक रिपोर्ट २०१६-२६।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, २००८।
3. चतुर्वेदी, बनारसीदास. साहित्य और जीवन. नई दिल्ली : सस्ता साहित्य मंडल, १९५४।
4. भगत, जगदीश. "रवींद्रनाथ का लोक चिंतन". वाग्धारा, वर्ष १, अंक १, २०२५, पृ. १८-२१।
5. विश्वभारती हिंदी भवन. पुस्तकालय वार्षिक रिपोर्ट २०१६-२६. शांतिनिकेतन: हिंदी भवन, २०२६।

